नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति

(विशेष संदर्भ: पारो, रतिनाथ की चाची, नई पौध)

साहित्य विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

के अंतर्गत

एम.फिल हिंदी (तु.सा.) उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2012-13

अध्यक्ष

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

साहित्य विभाग

शोध-निर्देशक

डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, साहित्य विभाग

साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 के क्रमांक 13 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

भूमिका

उपन्यास आधुनिक चेतना का वाहक है और स्त्री-मुक्ति का सवाल आधुनिक काल के महत्वपूर्ण सवालों में शामिल है। **"नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति" (विशेष संदर्भ : पारो, रतिनाथ की चाची, नई पौध)** नामक लघु शोध-प्रबंध समाज, स्त्री और संस्कृति के प्रति नागार्जुन के दृष्टिकोण पर आधारित है। इस विषय के लिए उनके तीन उपन्यासों का चुनाव किया गया है- 'पारो' 'रतिनाथ की चाची' और 'नई पौध'। तीनों उपन्यास स्त्री जीवन के सवाल पर केंद्रित हैं।

'पारो' निर्धनता के कारण बेमेल विवाह की यातना को झेलती बालिका की करुण कथा है। 'रतिनाथ की चाची' युवा विधवा की मर्मस्पर्शी कहानी। इसमें कुलीन निर्धन ब्राह्मण परिवार की युवा विधवा गौरी के माध्यम से विधवा स्त्री पर लगाए गए आचार संहिता की आलोचनात्मक पड़ताल है।

'नई पौध' में कन्या-विक्रय प्रथा को आघात बिंदु बनाया गया है। कन्या-विक्रय प्रथा के परिणामस्वरूप वृद्ध-विवाह की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हो जाती है। इस समस्या के उन्मूलन हेतु नागार्जुन 'नई पौध' में ठोस समाधान प्रस्तुत कर साहित्यकार के कर्तव्य का निर्वहन करते दिखाई देते हैं।

इस विषय पर काम करने के पीछे का सबसे बड़ा कारण स्त्री को लेकर नागार्जुन की स्त्री दृष्टि की पड़ताल है। उनके उपन्यासों के अध्ययन से गुजरने की प्रक्रिया में एक सवाल लगातार मेरे मन में हलचल मचाता रहा कि जिस समाज में नागार्जुन का जन्म हुआ उसकी इतनी कटु आलोचना क्यों की? नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि क्या थी? मैथिल समाज और संस्कृति को लेकर बाबा का नजरिया क्या था? ये सारे सवाल विषय चयन के आधार हैं। इसके साथ-साथ मैथिल समाज की स्त्रियों का जीवन भी विषय चयन का आधार बना। संस्कृति एवं धर्म के सम्मोहन में डूबी मैथिल स्त्रियाँ आज भी अपने ऊपर चलनेवाले दमनचक्र के लिए भाग्य को दोष देती हैं। परंतु संस्कृति के सम्मोहन से निकल नहीं पातीं। जबकि नागार्जुन के स्त्री-पात्र पुरुषवर्चस्ववादी संस्कृति के सम्मोहन को तोड़ती हैं। इसलिए उनके स्त्री-पात्र मेरे लिए जिज्ञासा के विषय रहे जिसको लेकर काम करने की मेरे अंदर प्रबल इच्छा थी। इन तमाम

कारणों से इस विषय का चयन किया गया। यह अध्ययन नागार्जुन के उपन्यास और मिथिला समाज की महिलाओं पर किया एक ईमानदार प्रयास होगा ऐसी उम्मीद की जा सकती है। नागार्जुन के उपन्यासों पर केंद्रित इस शोध कार्य को मैंने चार अध्यायों में विभाजित किया है।

अध्याय-1 'नागार्जुन व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। इस अध्याय को पुनः तीन उप-अध्यायों: 'नागार्जुन जीवन परिचय', 'नागार्जुन का काव्य-संसार: संक्षिप्त परिचय' एवं 'नागार्जुन का गद्य संसार: संक्षिप्त परिचय' में विभाजित किया गया है जिसके अंतर्गत नागार्जुन के पारिवारिक जीवन, शिक्षा और जेल-जीवन का उल्लेख है। इसके साथ उनके साहित्य संसार का परिचय भी दिया गया है।

अध्याय-2 ''नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति' (विशेष संदर्भ: पारो, रतिनाथ की चाची, नई पौध) है। इस अध्याय को पुनः तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है: 'पारो उपन्यास में अभिव्यक्त, मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति', 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में अभिव्यक्त मैथिल समाज में महिलाओं की स्थिति और 'नई पौध' उपन्यास में अभिव्यक्त मैथिल समाज में महिलाओं की स्थिति।

अध्याय-3 मिथिला संस्कृति के महत्वपूर्ण अंगों का वर्णन' है। इस अध्याय को छ उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है जिसके अंतर्गत पंजी-प्रबंध व्यवस्था, कुलीनता, द्विरागमन, मधुश्रावणी, सैराठ-सभा, वटसावित्री का वर्णन किया गया।

अध्याय-4 'नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि' है। इस अध्याय में प्रगतिशील लेखक नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन उनके उपन्यासों के आधार पर किया गया है। यह अध्याय तीन उप-अध्यायों: नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन, 'पारो' के संदर्भ में, 'नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन: रतिनाथ की चाची के संदर्भ में और नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन 'नई पौध' के संदर्भ में विभाजित है।

अध्यायों के क्रमवार लेखन के बाद उपसंहार दिया गया है। इसमें शोध विषय की संक्षिप्त व्याख्या एवं संपूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध में मैथिल स्त्रियों के जीवन की समस्याओं को नागार्जुन के उपन्यासों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। मैथिल समाज में संस्कृति के रूप में विद्यमान स्त्री-शोषक परंपराओं के व्यावहारिक उद्देश्य को स्पष्ट करने का भरसक प्रयत्न हुआ है। अपनी सीमाओं और कमियों के बावजूद इस लघु शोध-प्रबंध में मैथिली स्त्रियों के जीवन को लेकर कार्य करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है।

इसमें आधार सामग्री के रूप में नागार्जुन रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना का उपयोग किया गया है। नागार्जुन रचनावली सात खंडों में विभाजित है। यह नागार्जुन के संपूर्ण साहित्य का प्रामाणिक संकलन है जिसके संपद्दन संयोजक का कार्य उनके पुत्र शोभाकांत द्वारा किया गया है।

शोध प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है जिसमें इस लघु शोध प्रबंध में प्रयुक्त प्रमुख एवं चुनी हुई सहायक सामग्रियों का भी उल्लेख किया गया। शोध कार्य के लिए मैंने शोध प्रविधि के रूप में वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए आवश्यकतानुसार आलोचनात्मक पद्धति का भी सहयोग लिया है।

संभावना एवं उद्देश्य

उपन्यास आधुनिक चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त कलात्मक माध्यम है। आधुनिक चेतना एवं उपन्यास दोनों के उदय का संबंध पूंजी और मध्यम वर्ग से जुड़ा है। आधुनिक चेतना उपन्यास के उदय का विचारधारात्मक बना। प्रेस की स्थापना पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं पाठक के रूप में मध्यवर्ग का उदय इसके भौतिक आधार है।

तार्किकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धर्मनिरपेक्ष, जीवन-दृष्टि, यथार्थवादी विश्वदृष्टि, मनुष्य की महत्ता व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे आधुनिक चेतना का प्रभाव समाज एवं साहित्य दोनों पर पड़ा। समाज में मध्यकालीन जड़ता के विरूद्ध संघर्ष आरंभ हुआ। साहित्य विधा के रूप में उपन्यास इस संघर्ष में आधुनिक चेतना का वाहक बना। इसलिए उपन्यास को मध्यकालीनता के विरूद्ध आधुनिकता के विद्रोह को अभिव्यक्त करनेवाला साहित्य रूप माना गया है।

इस विधा के आगमन ने साहित्य को संस्कृति के स्वरूप को बदल दिया। अंतर्वस्तु चरित्र-चित्रण, भाषा सबसे यह अपने पूर्ववर्ती साहित्य विधा महाकाव्य से गुणात्मक रूप में अलग है। 'रामायण' के नायक दशरथ पुत्र राम का भव्य चरित्र एवं 'गोदान' का नायक होरी या 'रंगभूमि' के सूरदास के बीच का अंतर स्वतः ही दृष्टिगोचर है। उपन्यास ने हाशिए के समाज को अपना विषयवस्तु बनाया।

इसलिए नायक नाम एवं होरी के बीच का अंतर केवल चरित्र का अंतर नहीं है। अंतर यहां मध्यकालीन एवं आधुनिक चेतना का है। हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में इस चेतना की अभिव्यक्ति सुधारवादी प्रवृत्ति के रूप में हुआ। पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के संपर्क में आने के बाद भारत के बुद्धिजीवी वर्ग का ध्यान अपने समाज, परिवार में व्याप्त कुरीतियों की ओर गया। जिसको दूर करने के लिए इन लोगों ने अनेक प्रयास किए। ब्रह्म-समाज, आर्य-समाज, प्रार्थना-समाज आदि संस्थाओं के माध्यम से राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, केशवचंद सेन एवं इस प्रकार के अनके बुद्धिजीवियों ने भारतीय समाज में सुधार के लिए सामूहिक प्रयास किया। समाज-सुधार के इसी सामूहिक प्रयास को उन्नीसवीं शताब्दी का जवजागरण कहा जाता है।

स्त्री जीवन की समस्या नवजागरण के मुख्य मुद्दों में शामिल रहा है। तत्कालीन समाज में व्याप्त सती-प्रथा, बाल-विवाह, स्त्री-अशिक्षा, विधवा समस्या को लेकर राजा-राममोहन राय, दयानंद सरस्व ती एवं ईश्वरचंद विद्यासागर ने गंभीरता से विचार किया। राजा

राममोहन राय के प्रयास से सती-प्रथा पर रोक लगी। दयानंद सरस्वती एवं ईश्वरचंद विद्यासागर ने विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए प्रयत्न किया।

हिंदी साहित्य समाज में चल रहे इस आंदोलन से प्रेरणा ग्रहण कर रहा था। खासकर स्त्री केंद्रित मुद्दों को लेकर उपन्यास विधा में बहुत अधिक लेखन हुआ।

आरंभिक हिंदी उपन्यास अधिकतर स्त्री-शक्ति पर केंद्रित है। 'वामाशिक्षक', 'कुसुमकुमारी' 'सुशीला विधवा', 'देवरानी जेठानी', 'स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी' आदि हिंदी के आरंभिक उपन्यास स्त्रीर मुद्दों को केंद्र बिंदु बनाकर लिखा गया है।

बीसवीं शताब्दी में 1950 तक आते-आते भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को लेकर प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, यशपाल, अमृलाल नागर, नागार्जुन, रांगेय राघव आदि लेखकों ने महत्वपूर्ण लेखन किया।

'पारो' नागार्जुन की पहली औपन्या।सिक कृति है। मैथिली भाषा में रचित इस उपन्यास का प्रकाशन 1946 में हुआ। बाद में इसका हिंदी अनुवाद हुआ।'रतिनाथ की चाची' उपन्यास का प्रकाशन 1948 में एवं 'नई पौध' 1953 में प्रकाशित हुई।

इन तीनों उपन्यास के माध्यम से नागार्जुन ने स्त्री-जीवन के व्यापक समस्या को अपने समाज एवं परिवार के बीच चिह्नित किया।

बाल विवाह, बहु-विवाह अनमेल विवाह एवं विधवाओं की समस्या भारतीय समाज की गंभीर समस्या थी। मिथिला समाज में इस समस्या का क्या रूप है, नागार्जुन का यह आघात बिंदु रहा।

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध में इन सब पर विचार किया जाएगा। 'पारो', 'रतिनाथ की चाची' एवं 'नई पौध' के माध्यम से नागार्जुन ने मिथिला के ब्राह्मण समाज की निर्मम आलोचना की है। यह समाज स्त्री को लेकर कितना संवेदनहीन रहा है इसे नागार्जुन के उपन्यासों में देखा जा सकता है। विषय के लिए चयनित उपन्यास की सीमा में रहकर, प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध में मिथिला समाज एवं इनमें महिलाओं की स्थिति पर विचार किया जाएगा।

उपन्यासों के अध्ययन के क्रम में यह बात भी उभरकर आई है कि मिथिला संस्कृति के विविध रूप जैसे कुलीनता, सौराठ सभा, पंजी-प्रबंध मधुश्रावणी, द्विरागमन एवं वैवाहिक रस्मों का गहरा संबंध स्त्री-शोषण से जुड़ा है।

नागार्जुन के उपन्यास संस्कृति के चमकीले परतों को भेदकर इनके भीतर सिसकती और दम-तोड़ती स्त्रियों के जीवन को अभिव्यक्त करता है।

प्रस्तावित लघु शोध में इन सब पर विचार किया जाएगा। रचनाकार की स्त्री-दृष्टि को जानने का आधार रचना में चित्रित वे स्त्री-पात्र होते हैं जिसके समर्थन या पक्ष में रचनाकार अपने आप को खड़ा करता है। 'पारो', 'रतिनाथ की चाची' एवं 'नई पौध' के संदर्भ में नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन भी प्रस्तावित शोध का लक्ष्य है।

प्रस्तावित लघु शोध की संभावना

नागार्जुन हिंदी और मैथिली के उन रचनाकारों में से हैं जिन्होंने कविता और गद्य दोनों का सृजन किया। परंतु चर्चा के केंद्र में उनका काव्य संसार ही अधिक रहा। अधिकांश लोगों ने उनके काव्य पक्ष पर कार्य किया जबकि उनके उपन्यास विषय की गंभीरता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध नागार्जुन के उपन्यास पर किया गया एक ईमानदार प्रयास होगा, इस बात की उम्मीद की जा सकती है।

शोध प्रविधि

वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक शोध प्रविधि को अपनाया जाएगा विषय की आवश्यकता अनुसार इसमें फेर बदल की संभावना भी हैा इसमें आधार सामग्री के रूप में नागार्जुन रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली का उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध विषय की संक्षिप्त रूपरेखा

भूमिका

अध्याय-1: नागार्जुन व्यक्तित्व और कृतित्व

1.1 नागार्जुन: जीवन परिचय

1.2 नागार्जुन का काव्य संसार: संक्षिप्त परिचय

1.3 नागार्जुन का गद्य संसार: संक्षिप्त परिचय

अध्याय-2: नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति

2.1 'पारो' में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति

2.2 'रतिनाथ की चाची' में अभिव्यक्त मिथिला समाज में महिलाओं की स्थिति

2.3 'नई पौध' में अभिव्यक्त मैथिली समाज में महिलाओं की स्थिति

अध्याय-3: मिथिला संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग 'पंजी प्रबंध व्यवस्था, 'सौराठ सभा, 'कुलीनता', द्विरागमन, मधुश्रावणी, वटसावित्री का वर्णन

3.1 पंजी-प्रबंध व्यवस्था

3.2 कुलीनता

3.3 मधुश्रावणी

3.4 द्विरागमन

3.5 वटसावित्री

3.6 सौराठ-सभा

अध्याय-4: नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि

4.1 नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन (विशेष संदर्भ: पारो)

4.2 नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन (विशेष संदर्भ: रतिनाथ की चाची)

4.3 नागार्जुन की स्त्री-दृष्टि का मूल्यांकन (विशेष संदर्भ: नई पौध)

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आलोचना की सामाजिकता, मैनेजर पाण्डे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
2. आदमी की निगाह में औरत, राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2007
3. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, एम.एन. श्रीनिवास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2009, नई दिल्ली
4. इतिहास और वर्ग चेतना, जार्ज लूकाच, प्रकाशन संस्थान, संस्करण, 2008, नई दिल्ली
5. श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला संस्करण
6. जाति समाज में पितृसत्ता: उमा चक्रवर्ती, अनु.- विजय कुमार, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011, दिल्ली
7. दुर्ग द्वार पर दस्तक: कात्यायनी, परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1997
8. मैथिल समाज, पंचानन मिश्र, शेखर प्रकाशन, पटना
9. मिथिलात्व विमर्श, महामहोपाध्याय परमेश्र झा, मैथिली अकादमी, पटना, 1977
10. मैथिली साहित्यक इतिहास, श्री जयकांत मिश्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
11. मैथिली लोकगीत, रामइकबाल सिंह, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
12. मैथिली लोकगीत (समस्त संस्कारक गीत नाद), श्रीमती उमा देवी, उर्वशी प्रकाशन, पटना
13. मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र और हिंदी उपन्यास, कुंवरपाल सिंह, नवचेतन प्रकाशन, दिल्ली
14. भारतीय समाज: श्यामाचरण दुबे, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरा संस्करण, 2008,
15. स्त्री-मुक्ति के प्रश्न, देवेंद्र इस्सर, संवाद प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2009
16. स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, हिंदी पाकेट बुक, नई दिल्ली, संस्करण, 2002
17. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, मैनेजर पाण्डेय, साहित्य अकादमी, हरियाणा पंचकूला
18. स्त्री और पराधीनता, जान स्टुअर्ट मिथ, संवाद प्रकाशन, मेरठ, संस्करण, 2008
19. शोध प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा, मयूर पेपर बैक्स, संस्करण, 2003, नोएडा
20. शोध प्रस्तुति, उमा पाण्डेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, संस्करण, 1992, नई दिल्ली
21. स्त्री-पुरुष तुलना, ताराबाई शिंदे, संवाद प्रकाशन, मेरठख् 2002

22. साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, निर्मला जैन, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुदित किताबें

1. उपन्यास और लोकजीवन, रैल्फ फाक्स, अनुवादक नरोत्तम नागर, पीपीएच, नई दिल्ली
2. स्त्री उपेक्षिता: सीमोन द बोउवार, हिंदी पाकेट बुक, संस्करण, 2002, नई दिल्ली
3. स्त्री और पराधीनता, जान स्टुअर्ट मिल, संवाद प्रकाशन
4. हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहबाद
5. हिंदी का गद्य साहित्य: रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पत्रिकाएं

1. अभिनव भारती, अंक 2006-07 व 2007-08 उपन्यास और प्रतिरोध, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की शोध पत्रिका
2. अभिनव कदम, 24-25 संयुक्तांक, शताब्दी के महानायक, प्रकाशन, मऊ
3. अलाव, जनवरी-फरवी, 2011, लोकोन्मुखी साहित् चेतना की दोमाही पत्रिका, संपादक, रामकुमार कृषक
4. आलोचना, सहस्त्राब्दी अंक, नागार्जुन पर केंद्रित, अक्टूबर-दिसंबर 2011, प्रधान संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. आलोचना, अंक 56-57, प्रधान संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. आलोचना, सहस्त्राब्दी अंक, चवालीस, संपादक-अरूण कमल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. नय पथ, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक, जनवरी-जून (संयुक्तांक) 2011, जनवादी लेखक संघ की केंद्रीय पत्रिका
8. मिथिला शोध संस्थान, (शोध पत्रिका), मिथिना की लोकसंस्कृति विशेषांक, प्रकाशक, मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा, खंड-8, 2006
9. मिथिला शोध संस्थान, (शोध पत्रिका), मिथिना की लोकसंस्कृति विशेषांक, प्रकाशक, मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा, खंड-9, 2007
10. मिथिला दर्शन: (पत्रिका), मई-जून 2011, संपादक, नचिकेता
11. मिथिला महान: (पत्रिका), अक्टूबर-दिसंबर, 2003, प्रकाशक, श्री धुरवेंद्र कुमार, दरभंगा

12. मिथिलाक: व्रत आ पाबनि तिहार, श्रीमती कल्पना झा, उर्वशी प्रकाशन, मधुबनी
13. माधुश्रावणी-मीमांसा, श्रीमती शांति विभा शर्मा
14. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ. कपिदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2003 ई.
15. सामाजिक असंतोष ओ मैथिली साहित्य: डॉ. नीता झा, समकालीन प्रकाशन, पटना
16. साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, संपादक, निर्मला जैन, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
17. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका: डॉ. मैनेज पाण्डे, हरियाणा साहित्य अकादमी
18. संकलित निबंध, डॉ. मैनेजर पाण्डेय, एन.बी.टी.

उपसंहार

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अस्पष्ट है। क्योंकि यहाँ सिद्धांतः स्त्रियों के बारे में जिस प्रकार की बातें कहीं गईं हैं व्यवहार में उसके उलट हैं। स्त्री को लेकर एक श्लोक भारत के जनमानस में प्रचलित है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता का निवास होता है। परंतु यह सिर्फ किताबी बातें हैं। अगर नारी को पूजने अर्थात सम्मानजनक स्थान देने से देवता निवास करते तो फिर देवताओं के लिए इतने पूजा-पाठ और तपस्या करने की क्या जरूत है। किसी-न-किसी रूप में तो नारी प्रत्येक घर में है। उसकी पूजा की जा सकती है। परंतु व्यवहार में ऐसा नहीं है। व्यवहार में नारी को मिथ्यावादिता, मूर्ख, लालची, चंचल, कमजोर माना गया है एवं जिसको कठोर नियंत्रण में रखा गया। उसे शिक्षा से वंचित कर परिवार रूपी दुर्गद्वार के अंदर कैद कर दिया गया। उसकी स्वतंत्रता को खतरनाक कहकर खारिज किया जाने लगा। लोकमंगल के कवि तुलसीदास की पंक्ति है- ''जिमि स्वतंत्र भई, बिगरई नारी'' और 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।'' स्त्रियों को लेकर इस तरह के दृष्टिकोणों की भारी विडंबना है। तुलसी लोकमंगल के सबसे बड़े भक्त कवि माने जाते हैं। उनकी पंक्ति 'धूत कहो, अवधूत कहो' जाति प्रथा पर करारा व्यंग्य है परंतु स्त्री-दृष्टि कितनी संकीर्ण है। क्रांतिकारी कबीर तो नारी को नरक का कुंड मानते थे-

'नारी कुंड नरक की
बिरला थामे बाग''
और ''नारी की झांई परत
अंधा होत भुजंग
कबीरा तिनके कौन गति
नित नारी के संग।

नारी के प्रति इस प्रकार की निकृष्ट सोच प्रगतिशील भक्त कवियों की प्रगतिशीलता पर सवाल खड़ा करता है साथ ही नारी की कमजोर स्थिति को भी दर्शाता है। भारतीय समाज में बीसवीं शताब्दी तक स्त्रियां व्यवहारिक रूप से शिक्षा और रोजगार से वंचित रही। उच्च

शिक्षा के क्षेत्र में उनकी भागीदारी बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बढ़ी। फिर भी इन क्षेत्रों में इनकी हिस्सेदारी पुरुषों के बराबर नहीं है।

परंतु सौ साल पीछे महिलाओं की स्थिति का गवाह सती प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह आदि के आलोक में देखा जा सकता है। सती के नाम पर स्त्रियों को 19वीं शताब्दी तक स्त्रियों को जिंदा जलाया जाता था। 19वीं शताब्दी के तीसरे चौथे दशक से समाजसुधारकों ने स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए प्रयास किया। इनके प्रयास से सती-प्रथा पर लोग लगी परंतु बाल-विवाह पूरी तरह से बंद नहीं हो पाया। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों तक स्त्रियों की स्थिति में किसी प्रकार गुणात्मक परिवर्तन नहीं आ पाया। जबकि स्त्री-मुक्ति का सवाल नवजागरण के मुख्य एजेंडों में शामिल रहा। स्त्री-मुक्ति के सवाल को समाजसुधारकों के साथ साहित्यकारों ने भी उठाया। हिंदी उपन्यास में तो उद्भव काल से ही स्त्री-सवाल को उठाया जाता रहा है। स्त्री की शिक्षा, बाल-विवाह के दुष्परिणाम, विधवाओं की स्थिति को लेकर बहुत सारे उपन्यासों की रचना की गई। परंतु स्त्री-मुक्ति का सवाल एक सीमा से आगे नहीं बढ़ पाया। प्रेमचंद और जैनेंद्र जैसे रचनाकार भी स्त्री को पारिवारिक परिधि के भीतर ही स्वतंत्रता और सुविधा देने के हिमायती थे। पारिवारिक सीमा को वे छोड़ नहीं पाए और यही नागार्जुन अपने समकालीन रचनाकारों से आगे निलकते हैं। वे स्त्री को रूढ़ियों से मुक्त करते हैं। उसे सहज मानव के रूप में गढ़ते हैं। स्त्री पर आरोपित स्त्री-विरोधी प्रथाओं, रिवाजों, मान्यताओं की खुली आलोचना करते हैं। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए चयनित नागार्जुन के उपन्यास इस दृष्टि से अत्यंत उल्लेखनीय है।

'पारो ' में अनमेल विवाह की पीड़ा को झेलती युवती की कथा है। 'रतिनाथ की चाची ' युवा विधवा के जीवन की यातना कथा। 'नई पौध ' इन यातनाओं को झेलती स्त्रियों के मुक्ति का प्रयास। इन तीनों उपन्यासों के माध्यम से नागार्जुन ने मिथिला समाज एवं इसके सांस्कृतिक विशेषता का मूल्यांकन स्त्री के संदर्भ में किया है। इसके साथ ही अपने प्रगतिशील स्त्री दृष्टि का सबूत देते हुए पारो, गौरी, विसेसरी जैसे सशक्त स्त्री-पात्रों की रचना की। इनके स्त्री-पात्र संस्कृति के सम्मोहन को तोड़ती है।

पार्वती (पारो) पतिव्रता के पाखंड को उतारकर स्वस्थ दृष्टि से पति का मूल्यांकन करती है। पति को पमरेश्वर समझने की चाल में वह नहीं फंसती इसलिए पति के द्वारा किए जाने वाले अत्याचार को अपने मुंह से बोल पाती है।

गौरी (रतिनाथ की चाची) विधवाओं पर लगाए गए आचार संहिता को ठुकराते हुए अपने जैविक मांग को स्वीकार करती है। गर्भवती होने पर समाज द्वारा उसकी भर्तत्सना की जाती है। परंतु नागार्जुन पूरे तर्क के साथ उसी स्त्री पात्र के साथ खड़े दिखाई देते हैं।

'नई पौध' में नारी समस्या के समाधान हेतु विकल्प प्रस्तुत करते हैं। इसमें वे नौजवानों से सामाजिक परिवर्तन के लिए अपील करते हैं।

नागार्जुन प्रगतिशील साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। प्रगतिशील व्यक्ति समाज और संस्कृति का मूल्यांकन जाति, वर्ग और जेंडर से रहित होकर करेगा। विषमतामूलक संस्कृति की सराहना हरगिज नहीं कर सकता। मिथिला का समाज सामंती था। उसमें स्त्रियों की स्थिति बद-से-बदतर थी। स्त्री-शोषण के ऊपर संस्कृति का चमकीला आवरण पड़ा था। उत्सवधर्मी माहौल में स्त्री के जीवन का सत्यानाश किया जाता था। धनी व्यक्ति बालिकाओं के अभिभावक को पैसे देकर ढ़ोल-बाजे के साथ खरीदी हुई लड़की से विवाह कर लेता। इन सारी कुप्रथाओं पर नागार्जुन ने आघात किया है।

एक सच्चा साहित्यकार समाज को बेहतर बनाने के लिए अपनी कला का उपयोग करता है। इस प्रक्रिया में उसकी टकराहट प्रतिक्रियावादी सामाजिक शक्तियों से होती है परंतु इसमें जीत मानवता की होती है।

नागार्जुन ऐसे ही साहित्यकार हैं जो शोषित पीड़ित मनुष्य के पक्ष में जीवन और साहित्य दोनों मोर्चे पर लड़ते रहें और बेहतर समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध रहें।